हिंदी कि महत्ता

हमारे देश के नायकों ने हिंदी पर कभी चिंतन नहीं किया। यदि हमारे देश के मूर्धन्य विद्वानों ने राष्ट्र की भाषा हिंदी को घोषित कर दिया होता तो आज हमारे हिंद की भाषा राष्ट्रभाषा हिंदी होती । स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद जिस तरह हमारा राष्ट्रीय चिन्ह, राष्ट्रीय ध्वज ,राष्ट्रीय पशु ,राष्ट्रीय पक्षी आदि राष्ट्रीय धरोहर को घोषित किया था उसी प्रकार से उसी समय हमारे नायक राष्ट्रीय भाषा की भी घोषणा कर देते तो आज हमें आपनी राष्ट्रभाषा के लिए चिंतित नहीं होना पड़ता।

जबकि यह सभी जानते हैं हमारे स्वतंत्रता के सेनानी राष्ट्रीय कवियों ने जन जागरण के लिए हिंदी में अपनी कविताओं के द्वारा कलम की धार से अंग्रेजी शासन का विरोध किया था। इतना ही नहीं तुलसी बाल्मीकि केशव भूषण माखनलाल चतुर्वेदी सुमित्रानंदन पंत कालिदास सूर्यकांत त्रिपाठी निराला सुभद्रा कुमारी चौहान महादेवी वर्मा सरोजिनी नायडू आदि देशभक्त रचनाकारों ने अपनी कलम से भारतीय संस्कृति परंपरा को पोषित करते हुए हिंदी का संवर्धन किया है। अगर हम बात करें मीराबाई कबीर सूरदास रहीम कालिदास टैगोर आदि रचनाकारों ने भी हिंदी नहीं जन जागरण किया है।

जब तक हर प्रांत अपने देश की भाषा के लिए जागरूक नहीं होंगे तब तक हमारे देश की भाषा विश्व पटल पर स्थापित नहीं हो पाएगी।

मैं यह नहीं कहता कि अन्य प्रांत हिंदी का सम्मान नहीं करते आज हम देख रहे हैं। पढ़ रहे हैं। 70% हमारे देश की युवा शक्ति हिंदी का अनुसरण कर रही है। आज हमारे देश में हिंदी से अनेक रोजगार प्राप्त हो रहे हैं। हिंदी के माध्यम से पढ़कर देश के बड़े बड़े अधिकारी बन रहे हैं। हिंदी को समझने वाले लगभग 80 प्रतिशत व्यक्ति हमें देश में मिल जाएंगे।

हमें विश्वास है वह दिन दूर नहीं है जब हिंदी हमारे देश को सांवरेगी। नए नए आयाम गढ़ेगी। हिंदी की महत्ता आज जीवन के लिए वरदान के समान है

भास्कर सिंह माणिक
कोंच